Postal Registration No. G/CHD/0107/2012-14 RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

o"k 14 vad 02 28 Qjojh] 2014 eY; 5 #i;

प्रधान की कलम से

आम आदमी पार्टी बनाम चुनाव-2014

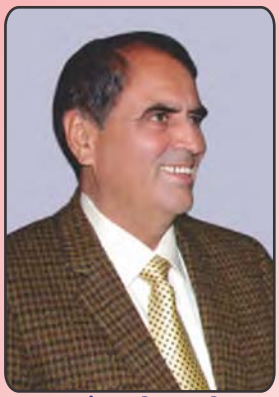

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

कभी राजनीति आदर्शवाद, सिद्धांत, समपर्ण और राष्ट्रीयता की होती थी। यह एक सेवा भाव थी जिसमें कहीं छल-कपट या भ्रष्टाचार जैसी कोई व्याधी नहीं थी। जनता उन्हे सत्कार से देखती और पूजती थी। आज राजनीति स्वार्थ, भाई-भतीजावाद और भ्रष्टाचार से ओत-प्रोत है। कोई विरला ही सिद्धांतों की राजनीति करता है। जनता ठगी सी महशूस करती है और पांच वर्ष तक खून के आंसू पीने को मजबूर होती है। अक्सर नये-नये दल, लोक लुभावन नारे देकर जनता को विश्वास तो जीत लेते हैं लेकिन बाद में वही पुरानी शराब नई बोतलों में नए लैवल से बिकती है।

'आप' की जीत कोई अप्रत्याक्षित या ऐतिहासिक घटना नहीं है और ना ही कोई अपवाद है। 80 के दशक में आंध्र प्रदेश में तेलगूदेशम पार्टी तथा असम में असम गण परिषद ने चुनावों में आशातीत सफलता हासिल की थी। आंध्र प्रदेश में 1983 में पहली बार एन टी रामा राव के नेतृत्व में गैर कांग्रेंस सरकार बनी। 'आप' एक वर्ष पुरानी पार्टी है जबकि असम गण परिषद 1985 अक्तूबर में गठित होकर दिसंबर में सत्तासीन हो गई थी। 100 वर्ष पुरानी कांग्रेंस को करारी मात दी थी। विधान सभा की 126 सीटों मे से 67 सीटें जीतकर छात्र नेता प्रफूल्ल कुमार महता सब से युवा मुख्यमंत्री बने तथा 14 लोकसभा सीटों में से सात पर काबिज हुए थे।

लोक लुभावने नारों की बात करें तो 1969-71 में श्रीमति इंदिरा गांधी ने बैकों का राष्ट्रीयकरण और 500 राजा महाराजाओं के प्रीवी पर्स समाप्त कर सत्ता पर अपना लोहा जमा लिया। पुरानी कांग्रेस को अलविदा कर पुराने कांग्रसियों को धूल चटा दी और कांग्रेस दो फाड़ कर अपने नाम से अलग पार्टी बना दी और फिर सत्ता में इतनी मदहोश हुई कि 1975 में 'आपातकालीन' घोषणा से देश का काला इतिहास लिख डाला। जय प्रकाश नारायण के आंदोलन ने राष्ट्र में नई चेतना भर दी और 1977 में एक नई पार्टी 'जनता पार्टी' सत्ता में आ गई लेकिन शातिर दिमाग ने वहां भी नेताओं को दो वर्ष में ही सब्जबाग दिखा पार्टी को छिन्न भिन्न कर दिया। आज लालू प्रसाद यादव पुन: उन्ही की गोद में बैठे हैं जो जय प्रकाश नारायण के कभी झंडा बरदार थे। आज घोटालों के सरताज का मुकट पहने आर्दशों को श्रद्धांजलि देकर अपने गुनाह छिपाने हेतू घोटाला सरताज सी बी आई जैसी संस्थाओं के बलबूते चल रही सरकार की सेवा में हाजिर हैं।

श्रीमति गांधी के समाजवादी नारों ने पहले से बेहाल जनता को कंगाल कर दिया। ऐसे अनेकों उदाहरण हैं जहां कांग्रेस ने विपक्ष की सरकारों को दो फाड़ कर दिया और जनता को पुराने ढर्रे पर ला खड़ा किया जैसे कि पंजाब में सरदार गुरनाम सिंह की सरकार को तोड़ स० लक्ष्मण सिंह की सरकार बनवा दी और वित्त मंत्री जगजीत सिंह चौहान को खालिस्तान का झंडा पकड़ा दिया। कश्मीर में फारूख अब्दुला की संविधानिक सरकार को गिरा कर उन्ही के रिश्तेदार को सत्ता थमा दी। जनता आक्रोशित हुई और जो बाद में हुआ किसी से छिपा नहीं। आज भी कश्मीर सुलग रहा हैं। एन टी रामा राव की संविधानिक सरकार तोड़ दी, प्रतिपक्ष की एकता के आगे तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह को झुकना पड़ा और सरकार पुन: बहाल हुई।

1991 में अर्थ व्यवस्था चरमरा गई थी तथा हमें अपनी बुलीयन अर्थात सोना निर्यात करना पड़ा था आज अरबों-खरबों के घोटाले उजागर हुए हैं और भ्रष्टाचारी कांग्रेस छोड़ने वाले दलों के या कांग्रेस से जुदा हुए नेता ही आरोपित किए गए हैं। कांग्रेस की बैतरणी में बैठे कभी कोई भ्रष्टाचारी नहीं कहलाया उसके लिए क्लीन चिट थोक में छपवाकर रखी गई हैं तथा हर छोटा बड़ा नेता एक ही सुर में चीखना चिल्लाना शुरू करता है और बड़े से बड़े घोटाले पर पर्दा डाला जाता है जैसे कोयला आंबटन घोटाला, बोर्फोस घोटाला, आदर्श हाउसिंग घोटाला, बाड्रा केस, जाली राशन कार्ड, झुगी झोंपड़ी केस, स्लम बस्ती घोटाला, डीटीसी बस खरीद घोटाला, बिजली घोटाला, किसी मुद्दे पर बात की जाए उसमें घोटाला। नित नया सूरज और नया घोटाला उजागर हो रहा है फिर भी हम हैं पाक-साफ 'अपनी तो यह आदत है कि हम कुछ नहीं कहते' कहने को कपिल सिब्बल, मनीष तिवारी, दिगविजय सिंह जैसे अनेकों नेता हैं। इन घोटालों से त्रस्त जनता ने 'आप' पार्टी के अरविंद केजरीवाल को अप्रत्याशित जीत दी और कांग्रेस को धूल चटा दी लेकिन पूर्ण बहुमत किसी को ना मिला। दिल्ली की 70 सीटों में से 32 लेकर भी भारतीय जनता पार्टी ने जोड़ तोड़ कर सरकार ना बनाने का निर्णय लिया लेकिन अहंकारी शीला दीक्षित ने 15 वर्ष तक दिल्ली पर राज किया जो कहती थी कि वो केजरीवाल को जानती तक नहीं, वो कौन है? उस नौसीखिए की मार्फत जनता ने उसे सत्ता से बाहर का रास्ता दिखा दिया।

आमतौर पर ये माना जाता है कि सियासत में अवसर ही प्रधान होता है। इस लिए ये कहा जाता है कि राजनीति में न कोई स्थाई दुश्मन ही होता है और नही कोई स्थाई दोस्त।

शेष पेज 2 पर

'k"k i;t&1

लिहाजा अब राजनीति सुविधा के आधार पर होती है। कुर्सी सलामत रहे किसी भी पार्टी को किसी से मदद लेने में कोई गुरेज नहीं। दिल्ली में कांग्रेस का सफाया करने वाली 'आप' पार्टी को कांग्रेस ने बिना शर्त समर्थन तो दे दिया, लेकिन ये समर्थन टिक नहीं पाया। दोनों की राहें अलग हो चुकी हैं। आप फिर आंदोलन की राह पर है। ये किसी से छिपा नहीं है कि अरविंद केजरीवाल ने मुज़्यमंत्री पद का त्याग दिल्ली की जनता की सहानुभूति हासिल करने के लिए किया। अब देखना यह है कि ज़्या उन्हें पहले जैसे जन-सहानुभूति हासिल हो सकेगी, जोकि संभव नहीं लगता। इसकी वजह ये है कि उन्हें दिल्ली की जनता ने दिल्ली के सामुहिक विकास के लिए चुना था, लेकिन केजरवाल ने महज लोकपाल का हवाला देते हुए अपने पद से इस्तीफा दे दिया। ये चुनावी हथकंडा भर है। जिसे जनता समझ चुकी है।

केजरीवाल ने सीएम रहते अपने वादे निभाने के खोखले प्रयास किये। 700 लीटर पानी मुफ्त मिलेगा, मीटर लगाया जाएगा इससे डेढ़ करोड़ के आबादी में से केवल 10 लाख लोगों को लाभ मिलने की संभावना है जताई, लेकिन साथ्ज्ञ ही पानी की दरें 10 प्रतिशत बढ़ा। बिजली की दरों में 50 प्रतिशत कटौती होगी, केवल 400 युनिट बिजली उपभोक्ताओं को लाभ होगा केजरीवाल इन फैसलों में बेहद जरूरी और आम आदमी की रोजी रोटी का जरिये लघु उद्योग या मध्यम परिवार इस लाभ से वंचित रख छोड़ा।

केजरीवाल ने अपने 49 दिन के मुज़्यमंत्री कार्यकाल में शीला दीक्षित के विरूद्ध भ्रष्टाचार के सभी सबूतों का दावा करने वाले अब अपनी बात से पलटते हुए भाजपा से सुबूत मांगने लगे। किस्सा कोदा यह है कि जिनके बलबूते केजरी को सीएम की कुर्सी मिली, उन्ही के खिलाफ'मुंह खाये, आंख शर्माए की उन्होंने राह पकड़ ली। केजरीवाल चाहते थे कि कांग्रेस उनकी तत्कालीन सरकार द्वारा सदन में लाए गए भ्रष्टाचार विरोधी बिल पर कांग्रेस उनका साथ दे। भ्रष्टाचार के लपेटे में शीला दीक्षित को लेने की कोशिश का ये पहला कदम कांग्रेस भला कैसे रास आ सकता था। लिहाजा कांग्रेस ने केजरी से समर्थन वापिस ले लिया। आम आदमी पार्टी और कांग्रेस की इस ज़ींचतान का ही नतीजा है कि दिल्ली की जनता को एक बार फिर चुनावों का सामना करना होगा।

कांग्रेस का ये इतिहास रहा है कि उसके समर्थन के साथ कोई सरकार कहीं कार्यकाल पूरा नहीं कर सकी। अपने हितों की पूर्ति न होते देख कांग्रेस ने हमेशा समर्थन वापिस लेने का काम बार-बार दिल्ली ही नहीं अन्य राज्यों में भी किया। ये किसी से छिपा नहीं है। एक बड़ी और सर्वविदित मिसाल श्री चंद्रशेशर, चौ. चरण सिंह की पूरे देश के सामने हैं, जिनको समर्थन दे कांग्रेस फिर पीछे हट गई थी। कांग्रेस एक बार फिर उन्हीं पैंतरों को आजमा रही हैं। कांग्रेस की पुरजोर कोशिश है कि किसी ज़ी कीमत पर देश में तीसरे मोर्चे का गठन न हो, तथा भारतीय जनता पार्टी को भी हर हाल में सज़ा से दूर रखा जाए।

कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व की कोशिशें मोदी लहर और तीसरे मोर्चे की बढ़त को रोकने के लिए हर तरीके से जारी हैं। शायद यही वजह है कि राहुल गांधी के इमेज सुधार हेतू दो जनसंपर्क ऐजेसियों को ठेका दिया गया है। कहा जा रहा है कि इस पर 500 करोड़ रूपये खर्च होगें। सवाल ये है कि लोगों के बीच महंगाई, भ्रष्टाचार, घोटाले-घपले और कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व की बड़े मामलों में उदासीनता, सीमा पर सेना के जवानों के सर-कलम करने की शर्मनाक घटना और पाकिस्तान के नुमाइंदों को भारत आने के बाद बिरयानी खिलाने जैसे आचरण से देश की जनता के दिलों में जो गुस्सा है, ज़्या जनता का वो गुस्सा इन इमेज सुधार कोशिशों, लोकलुभावने नारों, वादों से शांत हो सकेगा? आज देश को आजाद हुए 67 वर्ष हो चले हैं। इस कार्यकाल में साठ बरस कांग्रेस ने इस देश पर राज किया, केवल 6 वर्ष गैर कांग्रेस सरकार रही है। ये ताज़्जुब और हैरानी की बात नहीं तो और ज़्या है कि जब आजादी मिली तो भी गरीबी हटाओ नारे से हमारा वास्ता पड़ा और साठ साल बाद ज़ी कांग्रेस गरीबी हटाओ नारा लगाने में जुटी है। देश कांग्रेस और उसके साठ बरस के राज का हिसाब मांग रहा है, वो ये कि तब से अब तक गरीबी हटाओ पे ही कांग्रेस ज़्यों अटकी है। यदि देश ने तरक्की की तो वो कौन लोग हैं जिनकी गरीबी हटी। चुनाव होने वाले हैं। कांग्रेस ने अब रसोई गैस के छह की जगह 12 सिलेंडर देने का ऐलान किया है। जतना खूब जानती है कि ये सब चुनावी ड्रामा है।

केजरीवाल की आप पार्टी ने अपने वादे पूरे करने की बजाय टीवी चैनल्स और धरने-प्रदर्शन पर ज्यादा जोर दिया। यही नहीं जनता दरबार के पहले वायदे में विफल रहे और साथ लगती दूसरी मंजिल पर भाग खड़े हुए। जबकि 1977 से 1979, 1987 से 1989 तथा अगस्त 1999 से फरवरी 2005 तक हरियाणा राज्य में तत्कालीन सरकार ने प्रदेश में सरकार आपके द्वारा तथा जनता दरबार के हजारों कार्यक्रम सफलता पूर्वक आयोजन किये। आर्थिक नीति, विदेश नीति की विशेष भूमिका है। चीन-पाकिस्तान हमें आंखे दिखा रहे हैं। हर मुद्दे पर सरकारी विफलता पर न्यायपालिका को दखलंदाजी करनी पड़ रही है ज़्योंकि विधायका और कार्यपालिका निष्क्रिय हो चुकी हैं। न्यायपालिका में भी जस्टिस गांगुली जैसे कांड होने लगे हैं लेकिन फिर भी कुछ रवायतें अभी कायम हैं और राष्ट्र चल रहा है। आशा की जा सकती है कि राजनेताओं को सद्बुद्धि मिले ताकि वे जन कल्याण की ओर भी देखें जिसकी संभावनाएं नगण्य हैं ज़्योंकि हम जानते हैं कि भारत में परिवर्तन तो आ सकता है ज़्योंकि आम जन को मताधिकार है और अब तो मतपेटी में एक नया स्विच (किसी को नहीं) भी लग गया है देखें इसका ज़्या असर होता है। कम से कम जनता की भावना तो

सीधे रास्ते पर चलने वाला व्यक्ति कभी भटका नहीं करता। – नीति वचन

उजागर हो ही जाएगी लेकिन हमारे यहां क्रांति नहीं आ सकती ज़्योंकि हम अहिंसा के उपासक हैं और क्रांति हेतू खून-खराबा होना जरूरी है।

कुछेक नए आयाम भी खुले हैं जिनका राजनीति पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में असर इस चुनाव में भी होना जरूरी है। विश्व भर में सर्वाधिक 1250 महिला उद्यमी अरबपति बन चुकी है जिनकी संयुक्त संपज़ि 95 अरब डालर है। कल तक यही कहा जाता था कि महिला मत तो उसी को जाएगा जहां उनके पति, ससुर या पिता कहेगें लेकिन आज की प्रबुद्ध महिला से आंख मूंद कर मत हासिल करना आसान ना होगा। नवयुवा मतदाता अपनी भूमिका निभाएगा। उसकी अपनी सोच है, नए खून का संचार है और अब भारतीय नवयुवकों की बुद्धिमज़ा से तो ओबामा तक हिल गए हैं। उन्होने अमेरिकी जनता को बार-बार चेताया है कि भारतीय बुद्धिजीवी नवयौवन से बचे, मेहनत करें अन्यथा वे हमारी संस्थाओं पर काबिज होते जा रहे हैं। आज नासा के 90 प्रतिशत अभियंता तथा विश्व में बहुगिनती डाज़्टर भारतीय हैं। ज़्या ऐसा प्रबुद्ध वर्ग आंख मीच कर घोटालों को स्वीकार करेगा या उसे किसी तरह का प्रलोभन दिया जा सकेगा।

आज भी कुछ नेता अपने असूलों पर कायम सिद्धांतों पर चलकर अपना सब कुछ लुटाकर भी अपने सिद्धातों से समझौता करने को गवारा नहीं कर रहे हैं अन्यथा वे भी मायावती, मुलायम सिंह यादव, लालू प्रसाद यादव, करूणानीधि की तरह पाक साफ का प्रमाण पत्र हासिल कर चुके होते। अब तक का रिकार्ड और नवयुवकों और महिलाओं की प्रतिभागिता के साथ-साथ जनता की जागरूकता 2014 में कोई नया गुल खिलाने वाली है। आज का प्रबुद्ध मतदाता इतनी जल्दी पज़े खोलने वाला नहीं है। अभी तीन महीने का वक्त है कुछ स्पष्ट कहना उचित नहीं होगा। इतना जरूर कहा जा सकता है कि 'आप' की राजनीति का असर राष्ट्रीय स्तर पर जरूर होगा। हरियाणा ने 1600 युनिट तक बिजली उपभोक्ता को 200 रूपये की छूट दी है। मुंबई इसी तरज पर सोच रहा है। अन्य प्रदेश भी कुछ ना कुछ करेगें। लेकिन लोक लुभावन, मुफ्त आंबटन, आटा, दाल चावल, राशन सज़िसडी में बढोतरी हमारी आर्थिकता पर जरूर असर करेगी जो करीब सभी दल कर रहे हैं।

हाल के चुनावों ने यह सिद्ध कर दिया है कि हमारे लोकतंत्र को परिवारवादी संस्कृति छूत की तरह से चिपकी हुई है व दिन प्रति दिन पैल रही है। राजनैतिक पार्टियां हिंसा के खास तौर पर सांप्रदायिक दृष्टि से संवेदनशील क्षेत्रों में राजनैतिक हथियार के रूप में प्रयुक्त करने के मामले अधिक धाकड़ बन गए हैं। किसी को चिंता नहीं कि यह राष्ट्र को किस गर्त तक पहुंचा देगी। लेकिन आज का मतदाता आश्वस्त है कि नई सरकार समूचे तौर पर घरेलू आर्थिक एवं विदेश नीति पर कोई स्पष्ट रूख अपनाएगी। हालांकि तीसरे फ्रंट की संभावनाओं की रूप रेखा बन रही है लेकिन देवगौड़ा जैसी सरकारों से सबक लेते हुए मतदाता इतनी आसानी से सुविधा वाली राजनीति का समर्थन नहीं करेगा। नरेंद्र मोदी भारतीय जनता पार्टी के प्रधानमंत्री पद के उज़्मीदवार घोषित हो चुके हैं।

कांग्रेस राहुल गांधी को उतारने की तैयारी में है, ऐसे संकेत हैं। दूसरी तरफ प्रधानमंत्री सरदार मनमोहन सिंह अपने आकाओं को खुश करने हेतू नरेंद्र मोदी पर बरसने में जुटे हैं। जबकि इसका उल्टा असर हुआ जनता इससे आजिज हो चुकी है और ऐसा लग रहा है कि कह रही है ''अब और नहीं।'' क्षेत्रीय दलों की सोच और कार्यक्रम राज्यों तक ठीक हैं लेकिन केंद्र में यह मुद्दे नहीं चल सकते, ज़्योंकि कहीं ना कहीं वे अंतरविरोधी होते हैं तथा केंद्र का रवैया आर्थिक और विदेश नीति पर असर डालता है जो इन दलों के मुद्दों से थोड़ा हट कर होता है। तीसरे मोर्चे को नकारा नहीं जा सकता लेकिन अभी भी कुछ स्पष्ट कहना उचित नहीं होगा। बहुत से दल राष्ट्रीय होते हुए भी केंद्र में मोदी के समर्थक नजर आ रहे हैं। नरेंद्र मोदी ने विकास की धुरी उद्योग को बढ़ावा दिया और उद्योगपति उसका साथ दे रहे हैं। कृषक वर्ग को नई विद्या देने हेतू अनुसंधान के रास्ते कुछ करने का आह्वान किया, लेकिन अज़ी ग्रामीण भारत मोदी जी के सपने को साकार करने से दूर नज़र आता है, ज़्योंकि ग्रामीण वर्ग विशेषतौर से किसान-कामगार व काश्तकार अपने विकास हेतू क्षेत्रिय दलों को सर्वोपरी मानते हैं।

आज का युवा कुछ हद तक मोदी के साथ है। 65 प्रतिशत मतदारा 35 वर्ष से कम उम्र के हैं। 18 से 23 वर्ष के युवा 150 मिलीयन मतदाता का नव चेतना नवयुग की ओर झुकाव दिखा रहा है। हालात से साफ है कि कांग्रेस सरकार आने वाले लोकसभा चुनाव-2014 में 65-80 के बीच सिमट कर रह जाएगी। अत अब भाजपा तथा तीसरे मोर्चे को रोकने के लिए जितने प्रयास कांग्रेस करती रहेगी, जनता का जनाक्रोश कांग्रेस के खिलाफ बढ़ता जाएगा। कमोवेश कांग्रेस इसे स्वीकार भी रही है। अब वे विपक्ष को रोकने के लिए प्रयासरत हैं, लेकिन वे जितना विपक्ष के विरूद्ध बोलेगें विपक्ष ठोस मुद्दों के कारण उतना ही जनता में लोकप्रिय होगा। इसमें कोई शक नहीं कि बीजेपी अकेले शायद ही सज़ा में आ सके। क्षेत्रीय दलों की भूमिका रहेगी ही और आखरी ऐलान मतपेटी ने ही करना है। भावी राजनीति का पर्दा वक्त ही उठाएगा अभी समय मनन का है। राजनीति भविष्यवाणियों से नहीं होती बल्कि मतपेटी द्वारा सार्वजनिक मत होती है जिसमें पार्टियां थोड़ा बहुत जोड़ तोड़ करती हैं लेकिन जनमत सब को स्वीकार करना ही पड़ता है।

डा0महेन्द्र सिंह मलिक
आई0पी0एस0(सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं
राज्य चौकसी ज़्यूरौ प्रमुख, हरियाणा
प्रधान, जाट सभा चंडीगढ़ एवं
अखिल भारतीय शहीद सज़्मान संघर्ष समिति

लज्जा का आकर्षण सौंदर्य से अधिक होता है। – शेक्सपियर

Haryana: From Green to Grey State?

MG Devasahayam

Scholars believe that the name Haryana came from the words Hari (Sanskrit Harit, 'green')and Aranya (forest). At its formation in 1966, Haryana was meant to be so with early-day governments under Chief Ministers Bansi Lal and Devi Lal laying strong foundations for a green-state with their emphasis on agriculture, forestry and irrigation. Having joined the cadre around that time, I have seen and participated in the process in the arid districts of Hisar and Bhiwani adjoining the deserts of Rajasthan.

In recent years Haryana's political/bureaucratic architecture is geared to transform the once green-state into a grey-state with mad pursuit of land-lust as the overarching policy. This is evident from the way IAS officers of the state are being dealt with. While Ashok Khemka, who boldly stood against the marauding land-lobby is being ruthlessly hounded, his predecessors in the post of Director General, Consolidation of Land Holdings-Anil Kumar and SC Goyal-are being fiercely protected despite them being indicted by the Punjab and Haryana high court for passing several illegal orders favouring the land-mafia which have been described by the court as fraud!

In line with this architecture, Haryana Chief Minister has adopted a zamindari style of functioning! While banishing those who obstruct his real-estate agenda, he rewards his loyalists with fortunes and coveted postings. His most loyal aide in meticulously pursuing the agenda for eight long years was recently appointed to the prestigious constitutional position of Member UPSC thereby ravaging the virginity of this hollowed institution! Just prior to the appointment this officer had managed to scuttle a 'performance audit' by CAG on the frauds indulged in by the land-mafia.

At the state government it is the real-estate bureaucrats who occupy key positions in the Chief Minister's charmed circle. They include the Principal Secretary to CM who has already spent seven years as Director and Principal Secretary, Department of Town & Country Planning (DTCP). Another one is following suit with more than three years as DTCP. As against this dissenter Khemka, who had earlier seen 40 transfers in 20 years of his career, was allowed just 80 days in the job from where he had blown the whistle. After being repeatedly humiliated and tormented he is now being charge-sheeted formisconduct in cancelling the mutation of a fraudulent land-deal between Robert Vadra and DLF in Gurgaon in October 2012 thereby 'damaging their reputation'!

It is obvious that Haryana leadership has been assiduously building a kleptocratic network comprising of politicians, brokers and bureaucrats to usher in a real-estate oriented administration. In his report submitted to Haryana Government on 23rd May 2013, Khemka has named seven senior IAS officers, who have been either indulging in or covering up corrupt land-deals, as the bureaucratic part of this network. On 06 September a prominent TV Channel [Headlines Today] made an expose of the political/broker component of this network naming eight MLAs/their cronies who were charging Rs. 1 crore per acre for recommending change of land use. Earlier, on 04 February a detailed investigative story published in THE HINDU named Chief Minister Bhupinder Singh Hooda as the patriarch of this network!

The modus operandi has been simple. Chief Minister kept to himself the portfolios of DTCP-the licensing arm, Haryana Urban Development Authority (HUDA)-government's real estate developer and Haryana State Industrial Development Corporation (HSIDC)-the industrial promotion entity. This gave him complete control over all land deals in the State. Under the Land Acquisition Act, HUDA and HSIDC have powers to acquire land under Section 4 & 6 through the issuance of notifications, while land use change and award of license are that of DTCP.

Builders who are unable to coerce farmers to sell their land turn to the government for official assistance. Section 4 is invoked with the notification that the government requires those specific parcels of land for 'public purpose'. At this stage, builders enter into agreements to sell/collaborate with landowners/farmers, offering them a modest premium over the government's prevailing compensation rate. If landowners/farmers offer resistance, Section 6 is imposed, declaring the State's intention to acquire the land. This forces even resistant landowners to enter into agreements. Between the imposition of Sections 4 & 6, builders apply for change of land use and licenses to DTCP in collaboration with farmers/landowners. Once the land is released from acquisition, its value skyrockets and there is a kill!

The epicenter of the real-estate kleptocracy is Gurgaon, not long ago a sleepy village on the outskirts of

Delhi, now hailed as 'Millennium City'. According to Khemka, DTCP issued various types of colony licenses for a total of 21,366 acres from 2005 to 2012. He points out that if the market premium for a colony license is assumed to be as low as Rs 1 crore/acre, the land-licensing scam in the past eight years is worth roughly Rs 20,000 crore. At the premium of Rs. 15.78 crore/acre that Vadra earned, this figure would jump to Rs. 3.5 lakh crore!

It has been separately reported that in a span of six years Haryana Chief Minister had made a staggering 54,000 acres of land available for residential, commercial and industrial use through the notification of three successive master plans for Gurgaon. Customization of land development and crucial changes in land-use have played important role in the land-to-gold stories of many real-estate companies. This would be loot of humongous proportion dwarfing all other scams that have so far surfaced.

The Gurgaon story started sometime in early eighties when KP Singh, Chairman of DLF was going around with 3000 acres of agricultural land at Gurgaon bought dirt-cheap to build a high-rise-high-intensity 'world-class' city whereas Gurgaon hardly had the carrying capacity to withstand low-density-low-rise development.

I was then Haryana's Director, DTCP cum Chief Administrator, HUDA, having just moved in from the post of MD, HSIDC. At that time we had no intention whatsoever of allowing private players since HUDA was capable of managing the low-intensity-low-rise development of Gurgaon. Things took a dramatic turn after the then Chief Minister Bhajan Lal defected en masse to Indira Gandhi on her returning to power in early 1980. One of Indira Gandhi's conditions was to put the State Government machinery at the disposal of DLF to make Gurgaon into a 'world-class City'!

To facilitate this, I was eased out of the job with the kind of sophistication only Bhajan Lal was capable of. One fine morning he politely told me that DTCP was too small a department for my capabilities and that I should handle the 'bigger' and 'problematic' Transport department which was then a three-in-one job as Commissioner, State Transport Authority and Chief of Haryana Roadways. My protests did not work and I was packed-off.

Soon thereafter in 1981, first license was given to DLF and the 'DLF City' came up. In 1985 DLF started plotted development in the 3000 acres. Other realtors joined in and there was no stopping Gurgaon from 'developing' into a 'monster city', in the process destroying every vestige of town planning, urbanism, environment and sustainability. Not one prudent town planning norm has been adhered to. In short, Gurgaon is standing testimony as to how urbanisation should not be done in India. The sole consideration was vulgar real-estate/ property 'development' with the purpose of raking in billions.

More than any other state in India, Special Economic Zones (SEZ) has been a massive scandal in Haryana. Real-estate giants and multinational firms which bought hundreds of acres of land to set up SEZs were given a bonanza by their de-notification and permission to be used for other purposes. As a result, nearly two dozen projects-many of them in the lucrative urban markets of Gurgaon and Faridabad-are being converted into residential and commercial properties. Haryana had over the years notified 35 SEZs and acquired 1,452 acres of land from farmers, much of it in Gurgaon and Faridabad. Of these only six have so far been set up. The rest are being de-notified and will be allowed change of land use enabling real-estate mafia to mint millions.

But the one to take the cake is Reliance Industries Limited (RIL). Planned on around 12,500 acres, RIL's Gurgaon SEZ failed primarily on account of farmers' refusal to part with the land. Company was able to procure 2,584 acres of land-1,200 acres from farmers and 1,384 acres allotted by HSIDC. With the RIL failing to acquire requisite land, HSIDC revoked the allotment. SEZ having failed, the company is now developing a money-spinning Integrated Township Project on this 1,200 acres of prime land. Earlier Reliance was given permission to develop a 25,000 acre SEZ in Gurgaon and Jhajjar districts.

Quite a real-estate rampage by one of the small-sized states of the Indian union!

Not to be content, now Chinese companies are being offered thousands of acres of land for purchase. China Development Bank representatives recently visited a sprawling 6,000-acre site in Gohana which is on offer. They were also shown a 3,664-acre site in Kharkoda, around 50 km from New Delhi. In a bid to court Chinese investment, Haryana officials have visited Beijing and Shanghai and presented the state's real-estate 'expertise' as the unique selling point! With their deep pockets Chinese could gobble up vast quantum of land at prime prices, another wind-fall for the realtors!

Real-estate boom will sustain only if massive MNC/commercial/residential/industrial complexes, Malls and Theme parks get built all over. The key to this is copious supply of water and electricity. While water is diverted from irrigation use, power plants are being set up on fragile canal banks. Typical is the 2800 MW

capacity Gorakhpur Nuclear Power Plant on the Fatehabad Branch of the Bhakra Canal system. For this plant Haryana government has allotted 320 cusecs of water that would deprive over 140,000 acres of irrigation in this semi-arid region. Agriculture will perish and radiation/pollution will cause serious damage to crops, drinking water and wildlife (deer/blackbuck) in hundreds of downstream villages. This is clear case of extractive policy to destroy farming and promote real-estate business.

For this project 1600 acres of prime farming land has been acquired by virtually bribing landowners with compensation ranging from Rs. 12 lakhs to 32 lakhs per acre. Central Government is fully involved in this racket. Nuclear Power Corporation of India is the owner of the project, Ministry of Environment & Forest has given clearance without even looking into the water issues and Planning Commission has granted its approval. What is worse, the proxy Prime Minister is to lay the foundation stone of this project being opposed by almost every villager downstream!

Haryana is inexorably morphing from a green to grey state only to promote a black economy! The damage will be permanent. Will posterity forgive?

भारत की प्रथम स्वतंत्र राष्ट्रीय सरकार के राष्ट्रपति महानतम क्रांतिकारी : राजर्षि राजा महेन्द्र प्रताप

इतिहासों के पृष्ठों पर लिख दो, उनकी अमर कहानी। व्यक्ति नहीं सृष्टि हित, मिटने वाले वे बलिदानी।।
उनकी पावन चिर स्मृतियों में, भाव सुमन अर्पित कर सारे। श्रद्धा से झुक जाते, आज करोड़ों शीश हमारे।।

आर्यान पेशवा त्याग–मूर्ति, दार्शनिक, राजर्षि राजा महेन्द्र प्रताप एक महानतम यशस्वी क्रांतिकारी नेता, देशभक्त विचारक, मानवता के नव–अवतार, विश्व सरकार के प्रेरक, युग–दृष्टा, महात्मा बुद्ध जैसे तपस्वी सन्त, धुरंधर वक्ता, नव–युवाओं के पथ–प्रदर्शक, औद्योगिक शिक्षा के जन्म–दाता, सशस्त्र क्रांति की प्रथम पंक्ति के स्वाधीनता संग्राम के अग्रणी सेनानी, प्रबुद्ध लेखक, प्रखर सम्पादक, अपने सिद्धांतों पर अडिग पथी, हिन्दुस्तान की आजादी के भीष्म–पितामह, देवतुल्य व्यक्तित्व के लोकप्रिय एवं अंतरराष्ट्रीय ख्याति के ऐतिहासिक महापुरूष थे। वे विश्व की महान क्रांतिकारी विभूतियों में से हैं, जिन्होंने भारत को स्वतंत्रता दिलाने में अपनी जीवन की बाजी लगाते हुए मानव के कल्याण हेतु दुनिया को 'प्रेम–धर्म', 'संसार–संघ' और 'नवीन विचार विज्ञान' जैसे उत्कृष्ट विचार प्रदान किए। वे हरिश्चंद्र से सत्यवादी, कर्ण से महादानी और दधीच से भी बड़े त्यागी थे।

राजा महेन्द्र प्रताप सामन्ती–संस्कृति के उन शीर्षस्थ और मूर्धन्य महानुभावों में से एक थे जिन्होंने देश की आजादी के लिए प्राण–प्रण से न केवल संघर्ष किया, अपितु उनकी विचारधारा भविष्य के भारत के निर्माण हेतु एक उपयोगी प्रारूप देने में सक्षम और समर्थ रही। राजा साहब महात्मा गांधी के सत्याग्रह और अहिंसा के समर्थक थे लेकिन गांधीवाद को अधूरा दर्षन मानते थे। वे सामजवादी थे लेकिन मार्क्स को एकांगी मानते थे। वे राष्ट्रवादी थे परन्तु विश्व सरकार के प्रेरक थे। वे आधुनिकतम आधुनिक थे परन्तु आधुनिक सभ्यता को बदलने का प्रयास करते रहते थे। वे विद्रोही और क्रांतिकारी थे लेकिन शांति, प्रेम, समता व मानवता के अनूठे उपासक थे।

ब्रजभूमि राजा महेन्द्र प्रताप व भगवान श्रीकृष्ण दोनों की जन्म एवं कर्मस्थली है। ब्रज संस्कृति की दो प्रमु विषेशतायें हैं– पहली क्रांतिकारी भावना और दूसरी समन्वय की। यह अपने असली रूप में लोक–संस्कृति है और लोक संस्कृति हमेशा क्रांतिकारी चेतना और सामन्जस्यमयी होती है। राजा महेंद्र प्रताप इस संस्कृति के मूर्तमान प्रतीक हैं।

राजशाही में पले–बढ़े राजा महेंद्र प्रताप इतने बड़े क्रांतिकारी हुए जो विश्व में एक भूचाल लाने में कामयाब हुए। राजा साहब भगवान राम की तरह नैतिकता के समर्थक, भगवान श्रीकृष्ण का तेरह युद्ध में अकम्प खड़े, भगवान महावीर की तरह परम त्यागी तथा भगवान बुद्ध की भांति–दीन दुखियों के हिमायती थे। राजा जी जीवन भर अपने आपको मानवता का सेवक घोषित करते रहे। उन्होंने अपना नाम भी पीटर–पीर–प्रताप, मोहम्मद–सिंह–मोजेज, दाई थम्मे (जापानी) तथा ताथिधनमि (चीनी) रख लिया था।

राजा महेंद्र प्रताप हिन्दुस्तान की जिन ज्वलंत समस्याओं के समाधान में लगे रहे, जिस नये भारतीय समाज तथा राष्ट्र–निर्माण की कल्पना को साकार करते रहे, उसके लिए उनके विचार और कार्यक्रम आज और भी अधिक सम–सामयिक हो गए हैं। स्वतंत्र चिन्तन और निर्भीक विचारों की अभिव्यक्ति के लिए माने–जाने वाले राजा महेंद्र प्रताप के जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य राष्ट्र की संर्वागीण उन्नति था। उनके अनुसार, भारत को न केवल राजनीति रूढ़ियों से मुक्ति दिलाना आवष्यक है अपितु उन अनेक धार्मिक सामाजिक जटिलताओं से भी मुक्ति अपेक्षित है जिनके कारण देश एक सर्वतोमुखी उन्नति में असमर्थ है। राजा साहब भारतीय समाज में व्यापक बुराइयों जैसे जाति प्रथा, अस्पृश्यता, नारी शोषण, नशा, साम्प्रदायिकता आदि को दूर करने के उपायों पर गहन चिंतन करते रहे। गरीबी, भुखमरी, अशिक्षा, बेरोजगारी महंगाई जैसी ज्वलंत समस्याओं से लड़ने के लिए वे हमेशा राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय रहकर एक महान विचारक के रूप में दुनिया पर छाये रहे।

कष्ट और विपत्ति मनुष्य को शिक्षा देने वाले श्रेष्ठ गुण है, जो मनुष्य साहस के साथ उन्हें सहन करते है, वही जीवन में विजयी होते है।

राजा महेंद्र प्रताप आजादी के दीवाने थे। उसी दीवानगी में, उन्होंने राज–पाट छोड़ा, घर–द्वार से नाता तोड़ लिया, पत्नी तथा संतान से मुंह मोड़ लिया और निकल गये स्वतंत्रता का दीप लेकर और दीप भी ऐसा जलाया कि उसके प्रकाश में हिंदुस्तान की प्रत्येक घटना रोशन हो गयी। अपने लिए, अपनी संतान और परिवार के लिए तो सभी त्याग करते हैं, किंतु राजा महेंद्र प्रताप का त्याग देष और अन्ततः मानव समाज के लिए था।

राजा महेंद्र प्रताप भारतीय स्वाधीनता संग्राम के अप्रतिम एवं महान त्यागी योद्धा थे। उनकी उत्कृष्ट देशभक्ति और त्याग के सामने अनेक व्यक्तित्वों का कृतित्व फीका पड़ जाता है। लेकिन हमारी राजनीति की यह विडम्बना है कि ऐसे सच्चे देशभक्त और विचारक को भुला दिया गया। वास्तविकता यह है कि राजा साहब हिंदुस्तान की आजादी की लड़ाई के महान योद्धाओं में रहे हैं लेकिन इतिहासकारों ने राजा महेंद्र प्रताप के प्रति न्याय नहीं किया। अतः इतिहास का पुर्नलेखन होना परम आवष्यक है।

राजा महेंद्र प्रताप के परम भक्त एवं राजा महेंद्र प्रताप मिशन के संस्थापक सैक्रेटरी जनरल श्री शिवकुमार प्रेमी ने बारह ज्योर्तिलिगों में से एक महाकाल की नगरी उज्जैन, मध्य प्रदेश में दिनांक 21 नवंबर सन 1999 में सम्पन्न विशाल जाट महासम्मेलन में अपने अध्यक्षीय संबोधन में राजा साहब की उपेक्षा के प्रति हार्दिक टीस एवं वेदना को प्रकट करते हुए प्रतिनिधियों को अपने कर्तव्यों का पालन करने का आह्वान किया कि राजा महेंद्र प्रताप के संबंध में कलम चलाते हुए इतिहासकार व लेखकों के हाथ कांपते हैं, तभी तो उनसे संबंधित हिंदी भाषा की कोई भी बृहत पुस्तक उपलब्ध नहीं है। यदा–कदा राजा साहब के अंग्रेजी साहित्य के कुछ भाग हिंदी में रूपांतर करके राजा महेंद्र प्रताप मिशन, वृंदावन द्वारा ही प्रकाशित किए जाते हैं। यद्यपि मेरे अनुरोध पर शिक्षाविद् एवं मिशन के अध्यक्ष, प्रोफेसर डा. दुर्गपाल सिंह सोलंकी ने राजा साहब पर एक बृहद शोध–ग्रंथ लिखकर एक महत्वपूर्ण योगदान किया है और वे तन–मन–धन से उनके दर्शन एवं विचारों के प्रचार–प्रयास सेवा में समर्पित हैं। राजा साहब सब कुछ दान देकर चले गए, लेकिन आज उनकी धरोहर पर राजनीति की जा रही है। हमारी अगली पीढ़ी आजाद हिंद फौज के संस्थापक और भारत की अस्थायी स्वतंत्र राष्ट्रीय सरकार (1915) के प्रेसीडेंट राजा महेंद्र प्रताप को बिलकुल भूल जायेगी। उनके महल आज धूल फांक रहे हैं, उनके अखबार संसार संघ का प्रकाशन व्यवस्था के अभाव में बंद हो चुका है। निष्क्रियता के अभाव में मिशन का काम ठप्प पड़ा है। महान स्वतंत्रता सेनानी और ब्रिटिष साम्राज्य को चुनौती देने वाले महान कार्यों पर पर्दा डालने के प्रयास चल रहे हैं। क्या मैं समझूं कि समाज में अब कोई राजा साहब की सुध लेने वाला नहीं रहा? क्या हल और तलवार के धनी जाट कौम के लेखकों मैं कलम थामने की शक्ति नहीं रही? राजा महेंद्र प्रताप सभी धर्मों, जातियों, वर्गों, भाषाओं और राष्ट्रों की सीमाओं से ऊपर थे। दुनिया में एक सरकार, एक सेना, एक कचहरी उनका नारा था। आज विद्यर्मी और विजातीय लोग उन्हें याद नहीं करते तो कोई बात नहीं है, परंतु वह जाट कौम तो उस हुतात्मा को याद रखे, जिस कौम में उन्होंने जन्म लिया है।

राजा महेंद्र प्रताप बर्ल्ड–फैडरेषन (संसार–संघ) की बात करते थे और विश्व सरकार की रूपरेखा प्रस्तुत की। राष्ट्रीय सीमाओं को विश्व संघ के लिए घातक मानते थे। यदि सम्पूर्ण विश्व में एक सरकार हो राष्ट्रों में उनकी प्रतिद्वंदिता समाप्त हो जाय, तो न युद्ध रहेगा, न परस्पर तनाव। उस स्थिति में सभी सीमाएं मिट जायेंगी और उनके साथ मिट जायेंगी कलह एवं अशांति। राजा साहब का यह आदर्श स्वप्न नहीं रहा, यू.एन.ओ. के रूप में आज भी कार्यरत है, जो मानवीय एकता, समता तथा विश्व शांति के लिए नितांत प्रासंगिक है।

राजा महेंद्र प्रताप ब्रज भूमि में जन्मे, भारतीय स्वतंत्रता के लिये उन्होंने संघर्ष किया, देष–विदेशों में समता, प्रेम और सह–अस्तित्व की भावना के प्रसार व प्रचार में उन्होंने अपने आज को खपाया, परंतु इन सबके अंतर में राजा साहब का मूल उद्देश्य विश्व–प्रेम और विश्व शांति ही रहा है, जिसका साधन वे समस्त संसर की सरकारों का एक संघीय राष्ट्र के रूप में गठन मानते हैं। यही उनके समस्त जीवन–साधना का एक मात्र लक्ष्य है, जो उन्हें राजनीतियों की श्रेणी में नहीं वरन् राजर्षि की श्रेणी में अग्रगण्य स्थान प्रदान करता है। इसीलिए वे केवल भारत के ही नहीं, बल्कि इस अखिल विश्व की महानतम विभूति हैं।

अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी के प्रथम स्नातक रहे राजा महेंद्र प्रताप की प्रतिमा का अनावरण करते हुए भारत के उपप्रधानमंत्री ताऊ चौधरी देवीलाल ने 15 अगस्त 1995 को अलीगढ़ में अपने हृदयोगार प्रकट करते हुए कहा कि आज अपनी–अपनी जाति के लोगों को महापुरूष बनाने की होड़ लगी है। लेकिन जिन्होंने देश की आजादी के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया, न्यौछावर कर दिया, उन महान आत्माओं को पूछने वाला कोई नहीं रहा है। आज संसद की दीवारें अनेक लोगों के चित्रों से अटी–पड़ी हैं। उनमें से बहुत से लोगों के भी चित्र हैं जिन्होंने राजनीति में या दूसरे क्षेत्रों में कोई विशेष उल्लेखनीय कार्य नहीं किया है लेकिन इस महापुरूष ने अपना पूरा जीवन देश की आजादी को समर्पित कर दिया। उसका वहां जिक्र तक नहीं है। राजा महेंद्र प्रताप जो सारे सुख–चैन को त्याग कर देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने के लिए विदेश चले गये और पल–पल संघर्ष करते हुए विदेशों में अपने जीवन के बतीस वर्ष गुजार दिए। उस महान व्यक्तित्व को विदेशों में आज आजादी के 67 वर्षों बाद भी याद नहीं किया जा रहा है। लेकिन राजा महेंद्र प्रताप का आजादी की प्राप्ति में जो योगदान रहा, उसे नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। भावी पीढ़ियां मानवता के प्रति की हुई राजा साहब की अप्रतिम सेवा पर गर्व का अनुभव करते हुए उनके प्रति नत मस्तक होंगी।

लेखक
प्रोफेसर डा. दुर्गपाल सिंह सोलंकी
अध्यक्षः राजा महेंद्र प्रताप इंटरनेशनल मिशन, वृंदावन (मथुरा) उत्तर प्रदेश, भारीत
दलीप हाउस, नारायण भवन, नगला जोधना
कागारौल (आगरा) उ.प्र., 283119

आदर्श जाट समाज

& jkds'k ljkgk

Hkkjr o"kZ esa tkV tkfr dk bfrgkl dkQh iqjkuk rFkk xkSjo'kkyh gS rFkk tkVksa dh mRifr ds lEcU/k esa fofHkUu bfrgkldkjksa rFkk ys[kdksa ds dbZ er gSa mu erksa dk v/;;u djus ls iekf.kr gksrk gS fd tkV e/[;r% :i ls vk;Z oa'kt gSa rFkk bfrgkdkjksa rFkk ys[kdksa ds 'kks/k xzFkksa dk v/;;u djus ls irk pyrk gS fd tkV tkfr esa ikphu dky ls gh ,d J"B lekt dh fo'k"krk,sa jgh gSa ftlds dkj.k tkV tkfr ,d ik[kaM foghu rFkk 0;ogkfjd fopkjksa ds vkn'kZ lekt dh LFkkiuk dj ldh Fkh tkV lenk; dh dN iew[k fo'k"krk,sa ,slh Fkh tks tkV lekt dks J"B rFkk vkn'kZ cukrh FkhA

1- tkV lekt esa tkfr; Lrj ij lHkh tkVksa dks leku ekuk tkrk Fkk rFkk mues mPp Lrj ;k uhpk Lrj dk HksnHkko ugha ekuk tkrk Fkk ;g tkV lekt dh ljkguh; rFkk vuqie fo'k"krk gS tks bls vkn'kZ cukrh gSA

2- tkV nyqj] ohj ;ks)k rFkk ifjJeh fdlku ds :i esa ifl) jgs gSA ;s) ds le; tkV viuh ekrHkwfe rFkk viuz lekt dh vku] cku rFkk 'kku ds fy, viuk thou dk cfynku nsus esa rfud Hkh nsj ugha yxkrs gSa rFkk viuh egur ls leLr ns'k o lekt ds fy, vUu dk mRiknu djrs jgs gSa tkfd fdlh Hkh vkn'kZ lekt ds ykxksa ds fy, vko';d x.k gSA

3- tkV lh/ks rFkk Li"Voknh gS rFkk /kkfed ik[k.Mksa ds fojks/kh jgs gSA bues fdlh idkj ds Ny rFkk diV dh Hkkouk ugha gksrh tks buds eu esa gksrk gS ogh buds eq[k ij gksrk gSA ;s lh/kh o lPph ckr dgus esa dHkh ldkp ugha djrs rFkk vk;Z o'kh gksus ds dkj.k /kkfed v/k fo'okl rFkk ik[k.Mksa ls nwj jgrs Fks tkfd fdlh Hkh lekt ds ykxksa ds fy, vkn'kZ x.k gSA

4- tkV lekt vR;kpkj] vieku rFkk ukfj;ksa dh csbTtrh lgu ugha dj ldrk rFkk blds cnyk yus ds fy, ej feVus dks lnSo rS;kj jgrk gSA ftl lekt esa LokfHkeku dh Hkkouk ugha gksrh og dHkh Hkh vkn'kZ LFkkfir ugha dj ldrkA vr% tkV lekt esa LokfHkeku dk x.k blsa J"B rFkk vkn'kZ :i nsrk vk;k gSA

5- tkV lekt ds fofHkUu xks= rFkk [kki iky ik;h tkrh gSa rFkk [kki o ipk;rs ikphu dky ls gh tkV lekt ds fy, vkn'kZ rFkk 0;ogkfjd vkpkj lafgrk dk fu/kkj.k djus esa egRoi.kZ ;kxnku nsrh vk;h gS rFkk tkV lekt us loZer ls [kkik&ipk;rks ds fu.kZ;ksa dks Lohdkj o ykxw fd;k gS] ftlds dkj.k tkV lekt ds ykxksa dk thou vu'kkflr] e;kfnr rFkk l)kfrd jgk gSA tkfd ,d vkn'kZ lekt dh LFkkiuk dk iew[k dkjd gSA

6- tkV lekt 'k: ls gh çtkr= o ipk;rh 0;oLFkk dk icy leFkd jgk gSA ftlds dkj.k tkV lekt esa lekurk rFkk U;k;okfnrk dk x.k iew[k :i ls fo|eku jgk gS tkfd bls vkn'kZ lekt cukus esa iew[k lg;kxh jgk gSA

7- tkV lekt esa fL=;ksa dk Hkh lEekuh; LFkku iklr gS rFkk tkV ukfj;ka ?kj dk dk;Z djus ds lkFk&lkFk Ñf"k o i'kikyu dk dk;Z Hkh leku :i ls djrh jgh gS rFkk ?kj dks d'kyrkiod pykus esa ijh fuiq.k jgh gSA tkV lekt us gh fgUnq /keZ esa loZiFke fo/kok fookg dks viuk;k Fkk ckn esa vU; tkfr;ksa us Hkh fo/kok fookg dks Lohdkj fd;kA ukfj;ksa ds ifr lEeku dh Hkkouk Hkh blsa vkn'kZ lekt esa lokZUke LFkku iznku djrh gSA

tkV lekt dh mijksDr iew[k fo'k"krkvksa ds dkj.k gh ;g lekt ,d vkn'kZ lekt cu ik;k Fkk ijrq cnyrs le; rFkk ifjfLFkfr;ksa ds dkj.k orZeku tkV lekt esa dN cjkb;ka rFkk xyr iFkk,a vk x;h gS] ftlds dkj.k tkV lekt dh vkn'kZ vkpkj rFkk 0;ogkj 0;oLFkk ij foifjr iHkko iM jgk gSA tkV lekt esa dN iew[k xyr iFkk,sa ;s vk;h gSa&

1- vk/kfud lkp ds lkFk tkVksa esa 'kjkc rFkk vU; u'kks dk ipyu dkQh c< x;k gS tkfd LokLF; o pfj= ds fy, gkfudkjd gSA u'ks ds dkj.k /ku dk vi0;; rks gksrk gh gS] ifjokj o lekt esa Hkh >xMs c<rs gSA

2- fookg rFkk vU; lekjksgksa ij /ku dk [kpk o in'ku Hkh tkV lekt esa c<k gS tkfd /ku dh fQtwy [kph gS tcfd tkV lekt >Bh 'kkuk'kkdr dk icy fojks/kh jgk gS rFkk lknk thou thus esa fo'okl j[krk vk;k gSA

3- orZeku le; esa tkVksa esa vkfFkd lEiUurk vkus ds i'pkr tkV dN vkylh rFkk de ifjJeh gks x;s gS tcfd ifjJe djuk tkVksa dh iew[k fo'k"krk jgh gSA

4- orZeku le; esa vk/kfud lkp ds dkj.k tkV lekt esa dU;k Hk.k gR;k dh cjkbZ Hkh vk xbZ gSA ftlds dkj.k tkV lekt esa vfookfgr ;qodks dh l[;k c<rh tk jgh gS tkfd lekt ds fy, fpUrk dk fo"k; gSA

5- tkV lekt ij vkuj fdfyx ds vkjki Hkh yxrkj c<rs tk jgs gS tkfd fdlh Hkh lekt dh mUufr esa ckèkk gS rFkk tkV lekt dh ukjh ds ifr lEeku dh Hkkouk ds Hkh foifjr gSA

vr% ;fn tkV lekt }kjk lekt esa vk xbZ bu cjkb;ksa dks 'kh?k nj djus dk i;kl o bu ij fu;=.k uk fd;k rks tkV lekt viuk xkjo'kkyh] lEekfur rFkk vkn'kZ lekt dh inoh dks [kks nxkA vr% tkV lekt dks iqu% vkn'kZ tkV lekt LFkkfir djus ds fy, iR;d tkV ifjokj dks mijksDr cjkb;ksa dks viuk ?kj ls lekIr djus dh igy djuh gksxh rFkk lHkh [kki&ipk;rksa dks lekt dh bu cjkb;ksa dks lekIr djus ds fy, lo[kki ipk;r dk vk;kstu djds bu cjkb;ksa dks lekt ls lekIr djus ds fy, lolEer fufr fu/kkfjr djuh pkfg, rkfd vkn'kZ tkV lekt dh iqu% LFkkiuk dh tk ldsA

List of Donors of Jat Sabha Chandigarh

Dr. M. S. Malik, IPS (Rtd.), # 222, Sector 36-A, Chd.	22000.00
Sh. R.S. Malik, IAS (Rtd.), Valley Estate, Mata Mansa Devi Road, Near Railway Crossing, Pkl	11000.00
Sh. Jai Bhagwan s/o Sh. Anand Singh, VPO: Mundka, N. Delhi	11100.00
Sh. Rajendar Singh Panghal, # 37-P, MDC, Sec-4, Pkl	11000.00
Sh. Sultan Singh, IFS (Rtd), # 714, Sec-12, pkl.	11000.00
Sh. Randhir Singh, # 1068, Sector 21, pkl	11000.00
Sh. Ashok Bhadu, # 76, Sector 15-A, Hisar	11000.00
Sh. B.S. Gill, # 43, Sector-12A, Panchkula	5100.00
Sh. Takdir Singh, # 264-A, Sector 44, Chd	5100.00
Sh. Kapil Dev Dahiya s/o Sh. Dev Raj, 276/28, WRN,Soneapt	5100.00
Sh. Yash Dev Dahiya, # 276/28, WRN, Sonepat	5100.00
Sh. Suresh Chand Nandal, # 689/10, R.G. Colony Rohtak	5100.00
Sh. Yatinder Nandal, # 197/29, R.G. Colony Rohtak	5100.00
Sh. Yogesh Lochab, # G-62, GH-92, Sector 20, Pkl	5100.00
Sh. P. S. Mor, VPO: Seemla, Distt. Kaithal	5100.00
Sh. Navdeep Khatri, # 1927, Dabur Colony, Bhiwani	5100.00
Smt. Kitab Kaur w/o Sh. R. K. Malik, # 969, Sector 26, Pkl	5100.00
Dr. Sarita Malik, HCS, # 222, Sector 36-A, Chd.	5100.00
Sh. Virendar Punia, # 507, Sector 21, Pkl	5100.00
Sh. Naveen Gill, # 1422, sector 39, Chd.	5100.00
Sh. Maha Singh Inspector (Rtd.), VPO: Nara, Distt. Panipat	3100.00
Sh. Laxman Singh Phogat, 195, NAC Mani Majra	2300.00
Sh. Har Narain, DSP (Rtd.), VPO: Jassia, Distt. Rohtak	2100.00
Sh. Chander Bhan Pannu, # 1973, Sector 15, Pkl	2100.00
Sh. Naresh Maan, # 4, Himsikha Colony Pinjore	2100.00
Sh. Rajbir Sihag, Harco Bank Chandigarh.	2100.00
Sh. Jai Singh Dudi, C-34, GH-92, Sector 20, Pkl	2100.00
Sh. Manjeet Gulia, Drug Inspector, # 304, MDC, Sector 4, Pkl	2100.00
Sh. Ram Niwas Dalal, VPO: Sunaria, Distt. Rohtak	2100.00
Sh. K. S. Sihag, XEN(Rtd)	2100.00
Sh. Karan Singh Grewal, # 887, Sector 9, Panchkula	2100.00
Sh. Wazir Singh, # 1439, Sector 39-B, Chandigarh.	2100.00
Sh. Satyavir Singh Mor, # 2285, Sector 23, Chandigarh.	2100.00
Sh. Maha Singh Sehrawat, # 183-A, NAC Manimajra	1100.00
Sh. Jora Singh Deswal, 621, Amrawati Enclave Pinjore	1100.00
Sh. Raj Singh Dahiya, # 326, Sector 8, Panchkula	1100.00
Dr. (Mrs.) Rajwanti Mann, # 764-A, Sector 7, Chandigarh.	1100.00
Dr. C. P. Malik, # 402, Sector 20, Panchkula	1100.00
Sh. Harpal Chaudhary, # 503, Swastik Vihar Zirakpur	1100.00
Sh. Rishi Parkash, VPO: Farmana, Distt. Sonepat	1100.00
Sh. Kuldeep Singh, VPO: Matindu, Distt. Soneapt	1100.00
Sh. Purshotam Singh, # 35-A. Housing Board Kalka	1100.00
Sh. Kuldeep Singh, VPO: Farmana, Distt. Sonepat	1100.00
Sh. Ved Parkasah s/o Sh. Balwant Singh, # 1098, Sector 23, Sonepat	1100.00
Sh. Rakesh Gill, # 922, sector 25, Panchkula	1100.00
Sh. Naresh Dahiya, # 90, MDC, Sector 5, Panchkula	1100.00
Sh. Mahabir Singh, # 516, Sector 12-A, Panchkula	1100.00
Sh. Anand Singh, # 1378, Sector 21, Panchkula	1100.00
Sh. Ram Kumar Bhyan, # 702-B, GH 3, Sector 17, Pkl	1100.00
Sh. R. R. Malik, Principal (Rtd.), GMN College, Ambala Cantt.	1100.00
Sh. Mange Ram Chaudhary, # 305, GH 2, Sector 24, Pkl	1100.00
Sh. Manbir Singh Sangwan, # 874, Sector 25, Panchkula	1100.00
Sh. J. S. Dhillon, # 1330, Sector 21, Panchkula	1100.00
Sh. Richhpal Singh Punia, VPO: Bichpari Distt. Sonepat	1100.00
Ms. Dinaz Malik D/o Col. Dalbir Singh Malik, #222/36, Chd.	1100.00
Sh. Mahendar Singh Beniwal, Panchkula	1100.00
Sh. Om Parkash Malik, # 558, Sector 9, Panchkula	1100.00
Sh. Dharm Pal Chahal, # 9-A, GH 10, MDC, sector 4, Pkl	1100.00
Sh. Bharat Singh, # 2128, Sector 15, Pkl	1100.00
Sh. Om Parkash Beniwal, # 832, Sector 25, Panchkula	1100.00
Sh. M. S. Phogat, # 196-F, Sector 14, Panchkula	1100.00
Sh. Attar Singh Puwar, # 969, Sector 26, Panchkula	1100.00
Sh. Joginder Singh Beniwal, HMT Pinjore	1100.00
Sh. Karnail Singh, Harco Bank Sector 9, Pkl	1100.00
Sh. Rajendar Singh Sheroran, VPO: Rathi Garhi Distt. Hisar	1100.00
Sh. D. P. Dhankhar, DIG, ITBP Chandigarh	1100.00
Sh. Manoj Dhankhar, Advocate, Pb. & Hr. High Court Chd.	1100.00
Sh. Joginder Singh Malik, VPO: Shamlo-Kalan, Distt Jind	1100.00
Sh. Ishwar Singh Malik, # 2511, Sector 21, Panchkula	1100.00
Sh. Ishwar Singh Dalal, VPO: Julana, Distt. Jind	1100.00
Sh. Ram Phal Nain, # 71, Sector 21, Panchkula	1100.00
Sh. Shamsher Singh Ahlawat, Education Department Haryana Pkl	1100.00
Sh. Satbir Singh Dhankhar, # 1297, Sector 11, Panchkula	1100.00
Sh. Phool Kanwar, VPO: Bhainswal Kalan, Distt. Sonepat	1100.00
Sh. Bhisham Singh Wishraw, # 78, Maruti Nagar, Nagpur (MR)	1100.00
Sh. Jagdev Singh Rinwa, #225-A, Housing Board Kalka	1100.00
Sh. M. P. Dodwal, # 952, Sector 10, Panchkula	1100.00

सर छोटू राम जाट भवन पंचकुला में बसंत पंचमी समारोह का आयोजन

4 फरवरी, जाट समाज की उन्नति और विकास केवन दीन बंधु सर छोटूराम के पद चिन्हों पर चलने से ही संभव है। यह उदगार जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला के प्रधान डा0 एम0 एस मलिक आईएएस (सेवा निवृत) ने पंचकुला में मनाए गए सर छोटू राम के 133वें जन्म दिवस समारोह में किए। उन्होने कहा कि जाट कोई जाति नहीं बल्कि खेती बाड़ी से जुड़ा हुआ एक समुदाय है। जाट समुदाय की कुर्बानियों का जिक्र करते हुए उन्होने कहा कि वे सदा अग्रणीय लाईन में रहते हैं फिर चाहे अन्न उत्पादन हो या राष्ट्र की सीमा के प्रहरी। राष्ट्र की कुल कुर्बानियों का 80 प्रतिशत केवल इस समुदाय से हैं जबकि केंद्रीय प्रशासनिक सेवाओं में इस वर्ग का केवल 2 प्रतिशत हिस्सा है। अन्न उत्पादन में हरियाणा वर्ष 1966 में एक अन्न की कमी वाला राज्य था जो आज किसान की मेहनत की बदौलत कई राज्यों के नागरिकों का पेट भरने लायक उत्पादन कर रहा है। यहां तक कि अन्न भंडारण के लिए राज्य तथा केंद्र सरकार के पास प्रयाप्त भंडार भी नहीं हैं। सशस्त्र सेनाओं में प्रहरी और अधिकारी दोनों में जाट समुदाय बाहुलय हैं लेकिन दूसरी केंद्रीय सेवाओं में इस वर्ग का प्रतिनिधित्व नगण्य है। यह भेदभाव ज़्यों? उन्होने कहा कि हर क्षेत्र में इसी समदुाय के साथ भेदभाव होता आया है। कृषक सदा अभाव में ही जीता आया है। इसके लिए आरक्षण नितांत जरूरी है। वह भी केंद्रीय ओ बी सी सूचि के 27 प्रतिशत में तभी इसकों शिक्षा तथा नौकरियों में समान हक मिल सकेगा। डा0 मलिक ने समारोह के मुज़्य अतिथि चौधरी बींरद्र सिंह से कहा कि समाज को उनसे बहुत आशाएं हैं, वे सर छोटू राम के मार्ग पर चलकर जाट समुदाय का भला कर सकते हैं और आज की ज्वलंत मांग जाटों के लिए केंद्रीय सेवाओं में 27 प्रतिशत ओ बी सी सूचि में आरक्षण के मुद्दे को पुरजोर उठा सकते हैं।

उन्होने आगे कहा कि सर छोटू राम भारत के तमाम किसान वर्ग के प्रेरणा स्त्रोत थे। आज सरकार की किसान विरोधी नीतियों के कारण किसान-मजदूर वर्ग की हालत दयनीय होती जा रही है। किसान के नाम पर राजनीति करने वाले तो बहुत हैं लेकिन वास्तव में किसान-मजदूर वर्ग का हितैषी कोई नहीं जिस कारण देश की 80 प्रशित जनता का पेट भरने वाला यह कमेरा वर्ग भूखा रहने के कगार पर है। इसलिए आज दीन बंधु सर छोटूराम की किसान व गरीब वर्ग के लिए बनाई गई नीतियों को सुचारू तौर से चलाने की आवश्यकता है। वे सदैव हिंदू-सिज़्ख, मुस्लिम एकता व भाईचारें के पक्षधर रहे इसलिए उनके जीवन को किसी जाति विशेष से जोड़ना उनके कद को छोटा करना है। अगर देश की आजादी तक सर छोटू राम जीवित रहते तो हिंदूस्तान का बंटावारा ना होता। उन्होने खेद व्यक्त किया कि गढ़ी सांपला ज़्यूजियम में स्थापित सर छोटू राम की धरोहर सरकारी अनदेखी का शिकार हो रही है।

समारोह के मुज़्य अतिथि चौधरी बींरद्र सिंह ने कहा कि जाट समुदाय की माली हालात के सुधार के लिए शिक्षा का प्रचार प प्रसार नितांत जरूरी है, इसके लिए वे हर समय तैयार मिलेगे। सर छोटू राम ने शिक्षा के प्रसार के लिए विशेष कोष स्थापित कर रखा था जिससे मेधावी छात्रों को बिना किसी भेदभाव के आर्थिक सहायता उपलज़्ध करवाई जाती थी। नोबेल पुरूस्कार विजेता अज़्दुस सलाम पाकिस्तान के वाहिद इसका उदाहरण है। किसान मजदूर हित में उनके द्वारा किए कार्यों को उदाहरण की जरूरत नहीं है।

उन्होने कहा कि सर छोटू राम जीवन पर्यन्त दलितों व काश्तकारों के कल्याण व हितों के लिए संघर्षरत रहे और समाज के शोषित वर्गों - छोटे दुकानदारों, निर्धन वर्ग व किसानों के हितों के लिए कारगर कानून तक पारित करवाए। वे सदैव धर्म निरपेक्ष व स्वच्छ राजनीति के पक्षधर रहे और जोड़-तोड़ व मौकापरस्त राजनीति से उन्हे सज़्त नफरत थी। उनके द्वारा किया गया प्रत्येक कार्य जनहित को समर्पित होता था। वर्तमान हरियाणा के अस्तित्व में भी सर छोटू राम अह्म योगदान रहा है।

इस अवसर पर जाट आरक्षण संघर्ष समिति की राष्ट्रीय अध्यक्ष डा0 संतोष दहिया ने अपने ओजस्वी भाषण में कहा कि सर छोटू सदैव स्त्री शिक्षा के पक्षधर थे। उनका मानना था कि शिक्षित नारी एक मां, बहन, बेटी की भूमिका निभाते हुए एक सशक्त समाज का निर्माण कर सकती हैं तथा उन्नत खेती में परिवार का सहयोग दे सकती हैं। उन्होने किसान, कामगार वर्ग के बच्चों को शिक्षित करने हेतू जगह-जगह गुरूकूल व शिक्षण संस्थान स्थापित किए ज़्योंकि उनका मानना था कि किसान, मजदूर का परिवार शिक्षित होने से ही इस वर्ग की माली हालात में सुधार लाकर उनको स्वावलंबी बनाया जा सकता है। भारतीय समाज में बढ़ रही भ्रूण हत्या व महिला विरूद्ध अपराधों पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि दीन बंधु सर छोटू राम ने नारी जाति के विकास के लिए अनेकों योजनाएं शुरू की थी जिनको आज सुचारू रूप से चलाने की आवश्यकता है। उन्होने कन्या भ्रूण हत्या की लगातार बढ़ रही बुराई पर उस समय चिंता व्यक्त कर दी थी जब समाज इस ओर सजग भी नहीं हुआ था। सर छोटू राम जीवन प्रयंत किसान, काश्तकार, मजदूर वर्ग के हितों के लिए संघर्ष करते रहे लेकिन आज यह वर्ग दिशाहीन व अधारहीन होता जा रहा है जिसका कोई संगठन नहीं है इसलिए आज किसान भूखमरी के कगार पर है और किसान विपरीत नीतियों की मार झेलते हुए आत्महत्या करने पर मजबूर है।

इस अवसर पर जाट भवन चंडीगढ़ तथा सर छोटू राम जाट भवन पंचकुला में मुज़्य अतिथि द्वारा दीन बंधु सर छोटू राम की आदमकद मूर्तियों का अनावरण किया गया और देश की सुरक्षा, स्वायतज़ा एवं अखंडता के लिए अपने प्राणों की आहूति देने वाले शहीदों व योद्धओं तथा किसान व गरीब समुदाय के हितों के उत्थान के लिए संघर्षरत रहे महापुरूषों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। उपस्थित जन समुह द्वारा स्वतंत्रता से पूर्व के किसानों व गरीबों के मसीहा के नाम से प्रसिद्ध, जुझारू नेता दीनबंधु सर छोटू राम की प्रतिमा पर श्रद्धासुमन अर्पित करके श्रद्धांजलि दी गई। समारोह के दौरान खेलों व शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इन क्षेत्रों में उभरते हुए युवाओं को उत्साहित करने के लिए उत्कृष्ठ खिलाड़ियों व मेधावी छात्रों को नकद पुरूषकार व स्मृति चिन्ह भेंट कर सज़्मानित किया गया। जाट सभा द्वारा जाट भवन चंडीगढ़ तथा हरियाणा के अन्य परीक्षा केंद्रों पर 4 जुलाई 2013 को आयोजित की गई अखिल भारतीय भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक यादगार निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं, 21 नवंबर 2013 को आयोजित किए गए पोस्टर प्रतियोगिता के विजेताओं को नकद पुरूषकार देकर सज़्मानित करने के अलावा दूर दराज व विदेश से आए जाट सभाओं के प्रतिनिधियों को स्मृति चिन्ह देकर सज़्मानित किया गया। इस प्रकार समारोह के दौरान शिक्षा व खेल गतिविधियों को बढ़ावा देने तथा समाज कल्याण व समाज हित में कार्यरत समाज के

विभिन्न वर्गों के बुद्धिजीवी/समाजसेवी प्रतिनिधियों को सज़्मानित करने के लिए सभा द्वारा लगभग 5 लाख रूपये की राशी वितरित की गई।

सभा के प्रधान द्वारा वर्ष 2013 के दौरान जाट सभा द्वारा किए गए विभिन्न सामाजिक व कल्याणकारी कार्यक्रमों के साथ-साथ सभा द्वारा सैज़्टर 6 पंचकुला में निर्माणाधीन सर छोटू राम भवन की प्रगति रिपार्ट भी पेश की गई। जाट सभा के वर्ष 2013 के दौरान सरकारी व अर्ध-सरकारी सेवाओं से सेवा निवृत होने वाले आजीवन सदस्यों को भी इस अवसर पर सज़्मानित किया गया। इस अवसर पर जाट सभा द्वारा चलाई जा रही समस्त सामाजिक व अन्य कल्याणकारी गतिविधियों की पूर्ण जानकारी सहित दीन बंधु सर छोटू राम की जीवन गाथा व सिद्धांतों पर आधारित 'स्मारिका' व जाट सभा के कार्यक्रमों के 'वार्षिक कलैंडर' का विमोचन भी मुज़्य अतिथि द्वारा किया गया। समारोह के दौरान राष्ट्रीय ज़्याति प्राप्त गायकों व कलाकारों ने अपनी-अपनी कला से जन समूह को मंत्र मुगध कर दिया।

आर0के0मलिक
महा सचिव

सेना के लिए सोचने का सरकारों के पास समय नहीं : लै.ज. ठाकुर

कैथल, 19 फरवरी (पराशरः) लै.जरनल दिग्विजय सिंह ठाकुर ने कहा कि आज सरकारें घौटालों की पर्यायवाची बन चुकी हैं। सेना की भलाई के लिए सोचने का किसी के पास समय नहीं है।

ठाकुर ने कैथल में अखिल भारतीय यम्मान संघर्ष समिति द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में कहा कि सेना को जो सम्मान मिलना चाहिए था, उसमें कहीं न कहीं सरकारी तौर पर अभाव है। हताशा और निराशा को समाप्त करने का यह सबसे अधिक उचित समय है। उन्होंने कहा कि कैथल फौज बाहुल्य क्षेत्र है।

कार्यक्रम के मुख्य आयोजक हरियाणा के सेवानिवृत डी.जी. पी. डा. एम.एस. मलिक ने बताया कि समारोह के दौरान चीन एवं पाकिस्तान के साथ हुई वर्ष 1962, 1965, 1971 तथा उसके बाद कारगिल युद्ध में अपनी मातृभूमि के लिए जान न्यौछावर करने वाले विभिन्न राज्यों से ताल्लुक रखने वाले शहिदों के 400 परिवारों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सेवानिवृत आई.ए.एस. बी.डी. ढालिया आदि मौजूद थे।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 for Jat Girl 26/5'1" BA, JBT Working as Restorer in Punjab & Haryana High Court Chandigarh. Avoid Gotras: Dagar, Dalal, Suhag Cont: 09812639204
- SM4 for Jat Girl 27/5'5" Geologist/Scientist, M.Sc. Geology from Kurukshetra University. Working as Class-I Officer in Central Govt. at G.S.I. Dehradun. Avoid Gotras: Kundu, Malik, Rathee Cont: 08950092430
- SM4 for BDS Jat Girl 32/5'5" (divorced just after 2 months with mutual consent). Employed as Dental Surgeon (Class-I Officer) in Haryana Govt. Avoid Gotras: Malik, Mann Cont: 09417383946
- SM4 for Jat Girl 23/5'2" B.Tech (CSE) Doing MA (English) Avoid Gotra: Malik, Hooda, Joon Cont: 09780336094
- SM4 for Jat Girl 26/5'5" B.Tech. Doing M. Tech. Avoid Gotra: Pawaria, Nandal, Ahlawat Cont: 09811658557
- SM4 for Jat Girl 23/5'3" B.Tech final year. Avoid Gotra: Pawaria, Nandal, Ahlawat Cont: 09811658557, 09289822077
- SM4 for Jat Girl 28/5'3" Double MA & B.Ed. J.B.T Employed as JBT Teacher in Haryana Government since 2011. Avoid Gotras: Dhull, Goyat, Bhal Cont: 09467671451
- SM4 for Jat Girl 25/5'5" MA (English) Having two year computer Diploma. Employed in a reputed I.T. Company at Panchkula. Preferred match from Panchkula/ Chandigarh or nearby, Avoid Gotras: Ahlawat, Rajain, Deswal Cont: 09896218701
- SM4 for Jat Girl 29/5'3" MA, B.P.E.D..Avoid Gotras: Malhan, Jakhar, Nahara Cont: 09872010209, 09417495605
- SM4 for Jat Girl 24/5'2" M.S.c (Botony) from Punjab University Employed as Lecturer on contract basis. Avoid Gotras: Jaglan, Doon, Deswal, Khatri Cont: 09815047566,
- SM4 for Jat Boy 24/5'9" Employed as Constable in Chandigarh Police Avoid Gotras: Dahiya, Malik, Pawaria Cont: 09417567383
- SM4 for Jat Boy 28/5'11" B.Sc.(Marine Engineering) Convent Educated. Working in Indian Navy. Avoid Gotras: Kadyan, Malik, Tokas, Kaliraman, Cont: 08679157130, 09466203446

Jat Sabha Chandigarh (Regd.)

बंसत पंचमी समारोह के चित्र

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया ।